बाइबल टीचर

वर्ष 21 | अगस्त 2024 | अंक 9

सम्पादकीय

व्यवस्था और आज़ादी

बाइबल में एक बात पर ज़ोर दिया गया है कि आज हम मसीही लोग यीशु की स्वतंत्र व्यवस्था पर चलते हैं। यीशु जब क्रूस पर मारा गया था तब उसने पुरानी व्यवस्था को कीलों से जड़ दिया। जब हम यीशु में आ जाते हैं तब हमें पापों से मुक्ति मिल जाती है तथा हम स्वतंत्र हो जाते हैं। आज मसीही लोग स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था अर्थात् नये नियम अनुसार चलते हैं (याकूब 1:25)। कई लोग यह सोचते हैं कि यीशु में स्वतन्त्रत होने का अर्थ है कोई कानून व्यवस्था नहीं है। यह ग़लत सोच है। पुराने नियम की व्यवस्था अनुसार लोगों को दण्ड दिया जाता था, और कई बार उसी समय दण्ड मिलता था। पौलुस ने इसके विषय में बताया था कि जो यीशु में हमें आज़ादी मिलती है उसका अर्थ क्या है? पौलुस कहता है, ''और यह उन झूठे भाईयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतन्त्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनायें। आगे गलातियों 5:13 में वह कहता है कि ''हे भाईयों, तुम स्वतन्त्र होने के लिए बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतन्त्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर न बने वरन प्रेम से एक-दूसरे के दास बनो''। प्रेरित पौलुस कहता है, ''सो हे भाईयों हम शरीर के कर्ज़दार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें, क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे'' (रोमियों 8:12-13)।

जब हम बपतिस्मा लेकर यीशु में आ जाते हैं तब हमें आत्मा यानि परमेश्वर की आज्ञाओं अनुसार चलना है (रोमियों 8:1-2)। यीशु में आज़ादी पाने का अर्थ है अपने पापमय जीवन को छोड़कर एक पवित्र जीवन बिताना। पौलुस कहता है, ''क्योंकि मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो और दासत्व के जुए में फिर से न जुड़ो (गलातियों 5:1)। एक मसीही बनने के बाद हमें अपने जीवन में बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। और इसका अर्थ यही है कि हमें आत्मा के अनुसार यानि स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर चलना आवश्यक है। यदि

हम आत्मा अनुसार चलेंगे तो शरीर की लालसाओं को कभी पूरा न करेंगे (गलातियों 5:16)। क्योंकि शरीर और आत्मा दोनों एक-दूसरे के विरोध में हैं। एक विशेष बात जो हम पढ़ते हैं, वह कहता है, क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में है और आत्मा शरीर के विरोध में है इसलिए कि जो तुम करना चाहो वह न करने पाओ (16-17 पद)।

यीशु में आ जाने के पश्चात यानि जब आपने सुसमाचार की आज्ञाओं को मानकर बपतिस्मा लिया था, तब दासत्व की व्यवस्था से छूट गये थे क्योंकि शरीर के अनुसार चलने से लोग शरीर के कामों में अपना जीवन बिताते हैं। शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्याभिचार, गंदे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, जादु-टोना, बैर करना, लड़ाई-झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट डालना, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीलाक्रीडा और इनके जैसे और भी काम हैं। इसलिये यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा अनुसार चलें भी।

आज हम एक स्वतन्त्र देश में रहते हैं। हमें अंग्रेजों से आज़ादी मिली थी। इसलिए हम सबका यह कर्तव्य है कि अपने देश से प्रेम करें तथा इसकी उन्नति के लिए कार्य करें, और यह देखें कि हम एक स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र नागरिक हैं तथा कभी भी अपनी स्वतन्त्रता का अनुचित लाभ न उठायें।

प्रभु यीशु ने हमें पापों से आज़ाद किया, क्रूस पर अपनी जान को देकर अपने आपको बलिदान कर दिया। यह सब उस अनुग्रह के द्वारा हुआ जो प्रिय पिता परमेश्वर ने सारे जगत पर अपने अनुग्रह को प्रगट किया। आप आज परमेश्वर के अनुग्रह से उसके उद्धार को प्राप्त कर सकते हैं जो प्रभु यीशु के द्वारा संभव है। परन्तु अनुग्रह और स्वतन्त्रता का अर्थ यह नहीं है कि आप अपनी इच्छा अनुसार किसी भी गलत कार्य को करें या अपनी आज़ादी का गलत फायदा उठायें।

गलातियां के मसीही लोग यह सोच रहे थे कि अब हम व्यवस्था या पुराने नियम से आज़ाद हो गए हैं और मसीह में आज़ाद हैं इसलिए शरीर के कामों को करने में कोई बुराई नहीं है, क्योंकि मसीह में आने से अब कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है। मसीहियों से पौलुस कहता है, तुम एक-दूसरे के भार उठाओं, और मसीह की व्यवस्था को पूरा करो (गला. 6:2)।

याकूब भी इस बात को बड़ी सफ़ाई से बताता है, और इस प्रकार से कहता है, ''पर जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशिष पाएगाा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता हैं (याकूब 1:25)। आज हमारे लिये मसीहीयत और नया नियम एक स्वतन्त्र व्यवस्था है। असली आज़ादी जो हमें हमारे पापों से मुक्त करती है वो है यीशु का नया नियम। आज जो लोग पाप के दासत्व में हैं वो एक ऐसी गुलामी है जैसे किसी नशे की गुलामी जिसे लोग छोड़ नहीं पाते। यीशु जो कि जगत का उद्धारकर्ता है, आपको पाप की गुलामी से आज़ाद करता है, क्योंकि उसके सुसमाचार में पापी मनुष्य को पाप की गुलामी से बचाने की शक्ति है। (रोमियों 1:16)। बाइबल के सत्य को जानिए, सत्य आपको स्वतंत्र करेगा (यूहन्ना 8:32)।

अच्छा चरवाहा मैं हूँ
(यूहन्ना 10:11)
सनी डेविड

मुझे बड़ी ही खुशी है कि मैं एक बार फिर से परमेश्वर के वचन को इस लेख के द्वारा प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि इस समय हम उसके वचन को पढ़ने के लिये तैयार है। आज हम अपने पाठ में बाइबल में से यूहन्ना रचित सुसमाचार के दसवें अध्याय में लिखी कुछ बातों को पढ़ने जा रहे हैं। किन्तु इस से पूर्व कि हम इस जगह से पढ़ें यह उचित होगा कि हम इस बात पर गौर करें कि यीशु ने ये बातें क्यों कहीं। इस से पहिले, नवें अध्याय में, हम देखते हैं कि यीशु ने एक जन्म के अन्धे को उसकी आँखों पर मिट्टी लगाकर चंगा किया। हम पढ़ते हैं, कि यीशु ने थूककर मिट्टी सानी और उस मिट्टी को उसकी आंखों पर लगाकर उसे आज्ञा देकर कहा कि जाकर पास में बने कुन्ड में धो ले। सो लिखा है, कि उसने जाकर धोया और देखता लौट आया। किन्तु इस बात से फरीसी, जो उन लोगों के धार्मिक नेता थे, बड़े ही परेशान हो उठे। क्योंकि प्रतिदिन यीशु के इस प्रकार के कार्यो के द्वारा उसकी ख्याति लोगों में बढ़ती जा रही थी। परन्तु फरीसी यीशु से बैर रखते थे, क्योंकि वह उनकी बनावटी धार्मिकता और धर्मात्मापन का सब लोगों के सामने खुल्लमखुल्ला पर्दा-फाश किया करता था। सो हम देखते हैं, कि पहले तो फरीसियों ने उस मनुष्य को, जिसकी आंखें यीशु ने खोली थीं, बहुत समझाया कि वह इस काम का श्रेय यीशु को न देकर परमेश्वर को दे। किंतु जब वह न माना, तो हम पढ़ते हैं कि उन्होंने उसे बुरा भला कहकर आराधनालय में से बाहर निकाल दिया।

दसवें अध्याय में से अब आज जिन बातों को हम पढ़ने जा रहे हैं, वे यीशु ने इसी संदर्भ में कहीं। उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु और किसी ओर से चढ़ जाता है वह चोर और डाकू है। परन्तु जो द्वार से भीतर प्रवेश करता है वह भेड़ों का चरवाहा है। उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है। और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है, तो उनके आगे-आगे चलता है; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं। परन्तु वे पराए के पीछे नहीं जाएंगी, परन्तु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानतीं। यीशु ने उन से यह दृष्टान्त कहा, परन्तु वे न समझे कि ये क्या बातें हैं जो वह हम से कहता है। तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच-सच कहता हूं कि भेड़ों का द्वार मैं हूं। जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी न सुनी: द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर-बाहर आया-जाया करेगा और चारा

पाएगा। चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। अच्छा चरवाहा मैं हूं; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। मज़दूर जो न चरवाहा है, और न भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते हुए देख, भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है, और भेड़िया उन्हें पकड़ता और तित्तर-बितर कर देता है। वह इसलिये भाग जाता है कि वह मज़दूर है, और उसे भेड़ों की चिंता नहीं। अच्छा चरवाहा मैं हूं; जिस तरह पिता मुझे जानता है, और मैं पिता को जानता हूं। इसी तरह मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं, और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, और मैं भेड़ों के लिये अपना प्राण देता हूं।" (यूहन्ना 10:1-15)।

ये बातें यीशु ने फरीसियों के उस दुर्व्यवहार को देखकर कही जो वे लोगों के साथ किया करते थे। वे न केवल स्वयं को धार्मिक नेता या अगुवे समझते थे, परन्तु वे अपने आपको धर्म के ठेकेदार भी मानते थे। वे विश्वास करते थे, कि लोगों के ऊपर परमेश्वर की ओर से उन्हें सम्पूर्ण अधिकार मिला हुआ है, और जो वे चाहें लोगों को वही मानना वा करना चाहिए। जैसा कि हमने देखा, कि जिस मनुष्य की आँखें यीशु ने खोलीं थी, जब उसने उनके कहे अनुसार यीशु की निंदा नहीं की, तो उन्होंने उसे लेकर आराधनालय में से बाहर निकाल दिया। सो यीशु ने कहा, कि यदि वे वास्तव में भेड़ों के रखवाले होते तो वे उन्हें बाहर खदेड़ देने के विपरीत उनकी रखवाली करते। परन्तु यीशु ने कहा, कि वे चोर और डाकू की नाई हैं क्योंकि वे द्वार, अर्थात् परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा को ठुकराकर अपनी मनमानी कर रहे हैं। किंतु यीशु ने कहा कि जिस प्रकार चोर केवल चुराने या घात करने या नष्ट करने के उद्देश्य से आता है उसी प्रकार फरीसी भी लोगों को किसी प्रकार का लाभ पहुँचाने के विपरीत उनकी हानि कर रहे हैं।

फिर हम देखते हैं कि यीशु ने उन लोगों से कहा, कि अच्छा चरवाहा मैं हूं। क्योंकि वह परमेश्वर के अधिकार से, उसकी मनसा पूरी करने को आया था। उसने कहा, कि मैं इसलिये आया हूं कि मेरी भेड़ें जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। यहां हम देखते हैं कि यीशु, अपनी तुलना उन लोगों से कर रहा है, जो धर्म के नाम पर लोगों के ऊपर अन्याय वा अत्याचार कर रहे थे। उसने कहा, जबकि वे परमेश्वर के अधिकार से नहीं हैं, मैं परमेश्वर के अधिकार से आया हूं; वे अपने स्वार्थ की पूर्ती के लिये उनकी कोई चिन्ता नहीं करते, परन्तु मैं उन्हें बचाने के लिये अपना प्राण देता हूं। क्योंकि मैं वास्तव में चरवाहा हूं।

जब हम यीशु को एक चरवाहे के रूप में देखते हैं, तो हमारा ध्यान इस बात पर जाता है, कि जिस प्रकार एक चरवाहा अपनी भेड़ों को बचाने के लिये अपने प्राणों की भी बाजी लगा देता है, उसी प्रकार यीशु ने भी हमें बचाने के लिये अपने प्राणों को दे दिया। एक अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों से प्रेम करता है, उनकी रक्षा वा रखवाली करता है और उनकी अगुवाई करता है। प्रभु यीशु ने कहा, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।" (मत्ती

11:28) आज वह अपने वचन के द्वारा, जब हम उसे पढ़ते और मानते हैं, हमारी अगुवाई करता है। हमें चाहिये कि हम अपने आप को, भोली वा मासूम भेड़ों कि नाई, उसे सौंप दें। क्योंकि वह हमारी आत्मा की रक्षा वा अगुवाई करने के योग्य है।

आज संसार में बहुतेरे ऐसे लोग हैं जो धर्म के नाम पर भोले-भाले लोगों को अपने स्वार्थ को पूरा करने के दृष्टिकोण से बहका और फुसला रहे हैं। वास्तव में वे धर्म की आड़ में फाड़नेवाले भेड़िए के समान हैं। वे लोगों की आत्माओं को बचाने के विपरीत वास्तव में उन्हें नष्ट कर रहे हैं। यहां तक कि बहुतेरे मसीह के नाम की आड़ लेकर भी इस प्रकार के कामों को पूरा करने में व्यस्त हैं। किन्तु प्रेरित पौलुस बाइबल में एक स्थान पर कहता है, "अब हे भाईयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-साधे मन के लोगों को बहका देते हैं। (रोमियों 16:17-18)।

मित्रों, हमें चाहिए कि हम अपने-आपको पूर्ण रूप से प्रभु यीशु को सौंप दें। क्योंकि वह परमेश्वर की ओर से नियुक्त वह मार्ग तथा द्वार है जिसके द्वारा हम उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। उसी ने हमें बचाने के लिये अपना बलिदान दिया; और उसी में विश्वास लाकर और बपतिस्मा लेकर हम उद्धार पाते हैं। वह अच्छा चरवाहा है। वह अपने वचन के द्वारा हमारी रक्षा वा रखवाली तथा अगुवाई करता है। अपने जीवन को उसके हाथों में सौंपकर हम पवित्र बाइबल के लेखक के साथ यूं कह सकते हैं:

"यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझें कुछ घटी न होगी। वह मुझे हरी-हरी चराइयों में बैठाता है, वह मुझे सुखदाई झरने के पास ले चलता है, वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है। चाहे मैं घोर अन्धकार से भी भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। तू मेरे सतानेवालों के सामने मेरे लिये मेज़ बिछाता है, तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमन्ड रहा है। निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ-साथ बनी रहेंगी, और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।" (भजन संहिता 23)।

मित्रों, मुझे आशा तथा विश्वास है कि आप इन बातों के ऊपर पूरी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे। जैसा कि हम आप को पहिले बता चुके हैं, कि हमारे पास बाइबल अध्ययन के लिये कुछ पाठ उपलब्ध हैं। ये पाठ परमेश्वर के वचन को समझने में आपकी सहायता करेंगे। यदि आपने अभी तक इनका अध्ययन नहीं किया है तो अवश्य ही मंगवा-कर पढ़ें। प्रभु आप सब को आशीष दे।

वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा

जे. सी. चोट

वचन हमें बताता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिए आया था। अन्य शब्दों में, वह मन फिराव तथा पानी में बपतिस्मे का प्रचार करता रहा। यीशु चाहे परमेश्वर की दृष्टि में सिद्ध था, पर फिर भी उसकी सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए यूहन्ना से बपतिस्मा लेने के लिए उसके पास आया। बाद में यीशु ने अपने चेलों को प्रचार के लिए भेजा और कहा था कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा" (मरकुस 16:16)।

यीशु और अपने बीच के फासले को समझाते हुए यूहन्ना ने यूं कहा था, "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं । वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ़ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं" (मत्ती 3:11-12)। यूहन्ना भला यहां पर क्या कह रहा है? आइए बड़े ध्यान से इसे देखें और इन बातों को समझने की कोशिश करें। यकीनन परमेश्वर चाहता है कि हम इन बातों को जानें, और वास्तव में हम इन बातों को जान सकते हैं।

शुरु में, यूहन्ना यह दिखाता है कि यीशु उससे बहुत बड़ा है। उसने कहा कि वह तो मन फिराव के लिए पानी के साथ बपतिस्मा देता है, पर यीशु पवित्र आत्मा के साथ और आग के साथ बपतिस्मा देगा।

डिनोमिनेशनों में पवित्र आत्मा और आग के बपतिस्मे के विषय में बहुत कुछ कहा जाता है। कहा जाता है कि आज दोनों ही बपतिस्मे प्रभावी हैं। प्रचार किया जाता है कि आज विश्वासियों के लिए "पवित्र आत्मा का बपतिस्मा" लेना आवश्यक है, और दावा किया जाता है कि जिन्हें यह बपतिस्मा मिला होता है उन के पास चमत्कार करने की सामर्थ होती है। "आग का बपतिस्मा" शुद्ध किए जाने की प्रक्रिया या जीवन में आने वाली परेशानियों में से निकलते हुए कठिनाई को सहना बताया जाता है। कहा जाता है कि इससे व्यक्ति प्रभु की सेवा के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो जाता है। सवाल यह है कि क्या बाइबल ऐसा सिखाती है या फिर यह कुछ और बताती है?

पवित्र आत्मा के और आग के बपतिस्मे को समझने के लिए, हमें उस संदर्भ को देखना आवश्यक है जिसमें इसे दिए जाने की बात की गई है। यूहन्ना एक किसान की बात करता है जो गेहूं में से भूसी को उड़ा रहा होता है तथा अच्छे अनाज को सम्भालते

हुए गेहूं को फैला रहा होता है, परन्तु भूसी को जलाने के लिए अलग कर रहा होता है। अब वह कहता है कि यीशु भी लोगों के साथ ऐसा ही करेगा। उसके पास लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने, या पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा उन्हें आशीषित करने का अधिकार है। परन्तु भूसी, यानी बुरे लोगों को लेकर जलने के लिए आग में डाल दिया जाएगा। अन्य शब्दों में, उन्हें आग के साथ बपतिस्मा दिया जाएगा। इसका मतलब यह हुआ कि यूहन्ना यहां पर दो बपतिस्मों की बात कर रहा है, जिनमें से एक तो धर्मियों के लिए है, जबकि दूसरा दुष्टों के लिए।

वचन में आगे हम देखते हैं कि यीशु ने अपने चले जाने के बाद प्रेरितों के पास एक सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा भेजने का वायदा किया था । यूहन्ना 14. अध्याय को ध्यान से पढ़ने पर पता चलता है कि यह बपतिस्मा देने का अधिकार केवल मसीह के पास था और यह बपतिस्मा देने का वायदा केवल प्रेरितों को दिया गया था। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर उन्हें उन सब बातों को याद करने की जो यीशु ने उनके साथ रहते समय उन्हें बताई थीं, सच्चाई को बताने, होने वाली बातें बताने, अन्य भाषाओं में बोलने तथा आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ मिल जानी थी। उन्हें यह सामर्थ लोगों को यह यकीन दिलाने के लिए दी जानी थी कि परमेश्वर ने उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाकर और अपनी इच्छा को लोगों को बताने के लिए भेजा है।

हमें बताया गया है कि यह सामर्थ मिल जाने के बाद "उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा। (मरकुस 16:20)। परन्तु यह सब कब तक होता रहा? जब तक प्रेरित इस पृथ्वी पर जीवित रहे, क्योंकि केवल उन्हीं को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने का वायदा दिया गया था। तब तक नया नियम लिखित रूप में दे दिया जा चुका था और वचन को पक्का करने के लिए चिह्नों और चमत्कारों की आवश्यकता नहीं रही थी, क्योंकि यह तो पहले ही पक्का हो चुका था।

आज बहुत से ऐसे लोग हैं, जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का दावा करते हैं, परन्तु वे एक दूसरे का विरोध करते हैं, ऐसी-ऐसी शिक्षाओं को मानते तथा सिखाते हैं जो बाइबल के विपरीत हैं, ऐसी-ऐसी कलीसियाओं में हैं जिनके बारे में हमें बाइबल में पढ़ने को नहीं मिलता। और तो और वे ऐसे-ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर के वचन का सीधा-सीधा विरोध करते हैं। तो फिर वे कैसे कह सकते हैं कि उन्हें भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा वैसे ही मिला है जैसे प्रेरितों को मिला था और वे पवित्र आत्मा की अगुआई से बोल रहे हैं? सच तो यह है कि उन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला ही नहीं है। ऐसे लोग खुद तो धोखे में हैं ही, दूसरों को भी धोखा देते हैं।

यीशु की सामर्थ के द्वारा ही पिंतेकुस्त के दिन प्रेरितों के ऊपर (प्रेरितों 2) पवित्र आत्मा उतारा गया था। बाद में कुरनेलियुस के घर जाने के निर्देशों को मानने और उन्हें सुसमाचार सुनाने पर पतरस खुद दंग रह गया था। "जब मैं बातें करने लगा तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था" (प्रेरितों 10:44-46; 11:15)। आप देखेंगे कि इन अन्यजातियों में से सबसे पहले मसीह में आने

वालों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पतरस की सामर्थ से नहीं, बल्कि परमेश्वर के काम करने से मिला था। यह आज के उन प्रचारकों के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए जो पवित्र आत्मा को उनके "विश्वासियों" के ऊपर उतरने की आज्ञा देते हैं। मनुष्य परमेश्वर की आत्मा को आज्ञा नहीं देते हैं!

यह भी ध्यान दें कि प्रेरितों 2 में वर्णित पिंतेकुस्त वाले दिन पहली बार सुसमाचार सुनाए जाने के कई सालों बाद होने के बावजूद, प्रेरितों 11 में पतरस की बात से हम यह पक्का कह सकते हैं कि समय के उस अंतराल में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसी और को नहीं मिला था। पतरस ने क्या कहा था? कि "पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।" जो कुछ हुआ था उस सब को देखकर पतरस खुद दंग था! स्पष्ट है कि परमेश्वर ने यह साबित करने के लिए कि वह किसी का पक्ष नहीं लेता और योएल की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए कि "यहूदी हो या अन्यजाति सब प्राणी" मसीह के द्वारा उद्धार की आशीष पाएंगे, आत्मा के इस बहाए जाने को गवाही के रूप में इस्तेमाल किया कि उसने अन्यजातियों में से मनपरिवर्तन करने वालों को कलीसिया में स्वीकार करना था (प्रेरितों 10, 11)।

बाइबल में, किसी भी मनुष्य के पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के, केवल यही उदाहरण मिलते हैं। इस विशेष बपतिस्मे के इस्तेमाल का और इसे दिए जाने का समय बीत चुका है। यह इफिसियों 4:5 वाला वो "एक ही बपतिस्मा" नहीं है। इसके बावजूद, आज भी सब लोगों को, उसी बपतिस्मे के द्वारा आशीष दी जाती है क्योंकि प्रेरितों को सच्चाई का प्रचार करने और लिखित वचन देने के लिए पवित्र आत्मा की ओर से अगुआई दी गई थी।

पर उस दूसरे बपतिस्मे अर्थात् आग के बपतिस्मे का क्या मतलब है? यीशु के पास धर्मियों को ही नहीं, बल्कि दुष्टों को भी बपतिस्मा देने का अधिकार है। बाइबल बताती है कि अन्त के दिन आज्ञा न माननेवालों को आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 19:20; 20:10)। हम पढ़ते हैं, "डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है" (प्रकाशितवाक्य 21:8)। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस आग के बपतिस्मे की बात यूहन्ना ने की थी, वह यीशु द्वारा दिया जाना था। आइए हम प्रार्थना करें और प्रभु यीशु का आज्ञाकार बनने की कोशिश करें ताकि हमें वह बपतिस्मा न मिले।

बपतिस्मे का अर्थ गाड़े जाना या दफनाए जाना होता है। पाक रूह या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने पर प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उण्डेला गया था यानी उन्हें पवित्र आत्मा में डुबकी दी गई थी (प्रेरितों 2:1-4)। दुष्ठों को आग में बपतिस्मा दिया जाने पर उन्हें आग की झील में डुबकी दी जाएगी या दफनाया जाएगा। किसी ने कहा है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की हमारी गाड़ी छूट गई है, आग के बपतिस्मे की गाड़ी अभी आई नहीं है, पर पानी के बपतिस्मे की गाड़ी स्टेशन पर खड़ी है, जो कि पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरितों 2:38)।

इफिसियों 4:1-4. में पौलुस कहता है, "इसलिए मैं जो प्रभु में बंदी हूं तुम से विनती करता हूं कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो; और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

एक ही देह (यानी कलीसिया) है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

आज भला, कितने बपतिस्मे हैं? परमेश्वर के वचन के अनुसार उतने ही बपतिस्मे हैं जितने कि परमेश्वर हैं, यानी केवल एक!

वचन के अनुसार, मैं जानता हूं कि आपको पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला है, और मैं यह भी जानता हूं कि आपको आग का बपतिस्मा भी नहीं मिला है, क्योंकि वह बपतिस्मा तो अभी किसी को भी नहीं मिला, वह तो अन्त के दिन दुष्टों को दिया जाएगा। तो फिर सवाल है कि क्या आपने वचन के अनुसार पापों की क्षमा के लिए पानी में बपतिस्मा ले लिया है?

बाइबल के परमेश्वर की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर बनाया। उसने अपने वचन से शून्य में से सब कुछ सृजा। उसने कहा "और हो गया।" कभी किसी मनुष्य ने परमेश्वर को नहीं देखा। लेकिन किसी को भी उसके होने से इनकार नहीं करना चाहिए। स्वर्ग में एक परमेश्वर है। "परन्तु भेदों का प्रकटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या-क्या होने वाला है" (दानिय्येल 2:28)। मूर्ख ही होगा जो परमेश्वर के होने का इनकार करे। "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं । वे बिगड़ गए उन्होंने घिनौने काम किए हैं, कोई सुकर्मी नहीं" (भजन संहिता 14:1)। स्वर्ग में एक परमेश्वर है।

परमेश्वर ने संसार को बनाया। बाइबल बताती है कि स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो आदि में था। "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)। परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया, इसलिए वे उसी के हैं । "आकाश तेरा है पृथ्वी भी तेरी है: जगत और जो कुछ उसमें है उसे तू ही ने स्थिर किया है" (भजन संहिता 89:11)।

इब्रानियों 1:3 कहता है कि परमेश्वर सभी वस्तुओं को अपने वचन की सामर्थ से संभालता है। परमेश्वर की सर्वव्यापी शक्ति को उसकी सृष्टि में देखा जा सकता है। "आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाश मण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है। दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है" (भजन संहिता 19:1-2)।

हमारी सृष्टि परमेश्वर की रचना के कार्य का परिणाम है। बाइबल बड़े ही प्रभावशाली ढंग से परमेश्वर को हर चीज के सृजनहार के रूप में दिखाती है। "...कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं और सब पर यह बात प्रकाशित करूं, कि उस भेद का प्रबंध क्या था जो सब के सृजनहार परमेश्वर में आदि से गुप्त था। उस सनातन मंशा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु यीशु में की थी" (इफिसियों 3:8,9,11)। "हे हमारे प्रभु और परमेश्वर, तू ही महिमा और आदर और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजी और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं" (प्रकाशितवाक्य 4:11)।

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया। परमेश्वर ने सृष्टि और मनुष्य दोनों की ही रचना की। उसकी रचना का विशेष उल्लेख करते हुए बाइबल कहती है, "तब यहोवा ने सोचा कि मैं मनुष्य को जिसकी मैंने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रैंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं" (उत्पत्ति 6:7)। पुराना नियम परमेश्वर द्वारा मनुष्य की रचना की कहानी के साथ ही खुलता है (उत्पत्ति 1:1-31)। पुराने नियम के अन्त में मलाकी नबी ने बताया कि परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। "क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को उत्पन्न नहीं किया? हम क्यों एक-दूसरे को घात करके अपने पूर्वजों की वाचा को तोड़ देते हैं?" (मलाकी 2:10)। यह मान लेना समझदारी नहीं है कि मनुष्य शून्य में से, बिना आकार के तत्व में से निकला, जिसका कोई रूप नहीं। यह मानना समझदारी की बात है कि परमेश्वर ने हमें बनाया है। "निश्चय जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया और हम उसी के हैं, हम उसकी प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं" (भजन संहिता 100:3)।

बाइबल कहती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया। "तेरे हाथों से मैं बनाया और रचा गया हूं; मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं" (भजन संहिता 119:73)। परमेश्वर सृष्टि-कर्त्ता है, सृष्टि नहीं, उसने "सब" जातियों को बनाया है। "उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय, और निवास की सीमाओं को ... बान्धा है" (प्रेरितों के काम 17:26)। आरम्भ में मनुष्य को नर और नारी बनाया गया। "सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उनको बनाया है" (मरकुस 10:6)।

परमेश्वर अनादि है यानी वह समय में सीमित नहीं है। वह सर्वव्यापी है यानी वह किसी स्थान में सीमित नहीं है। वह सर्वज्ञानी है यानी उसका ज्ञान सीमित नहीं है। वह सर्वशक्तिमान भी है, यानी उसकी शक्ति सीमित नहीं है। परमेश्वर की सामर्थ सृष्टि में दिखाई देती है क्योंकि संसार और मनुष्य दोनों उसके हाथों का कार्य हैं।

मनुष्य परमेश्वर की विशेष रचना। मनुष्य परमेश्वर की विशेष रचना है जिसे परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। "क्योंकि तू ने उसको परमेश्वर से थोड़ा ही कम बनाया है, और महिमा और प्रताप का मुकुट उसके सिर पर रखा है। तू ने उसे अपने हाथों के कार्यों पर प्रभुता दी है; तू ने उसके पांव तले सब कुछ कर दिया है" (भजन संहिता

8:5,6)। मनुष्य विशेष है क्योंकि उसमें देह और प्राण या आत्मा है। बाइबल बताती है कि मनुष्य "आकाश के पक्षियों" से अधिक मूल्यवान है। "आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते?" (मत्ती 6:26)। यदि विकासवाद (अपने आप बनने) की शिक्षा सही है, तो हम जानवरों से अच्छे नहीं हैं। परन्तु हम जानवरों से अच्छे हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें एक अनश्वर आत्मा दी है।

बाइबल सच्ची है। हमें परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है। "फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।' तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:26-27)।

मनुष्य परमेश्वर की विशेष रचना है, क्योंकि उसकी देह मांस की है परन्तु वास्तविक व्यक्ति वह जीवित प्राणी है। "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया" (उत्पत्ति 2:7)। हमारे अंदर की आत्मा हमारी देह के मिट जाने के बाद भी रहेगी।

जीवन मूल्यवान है और थोड़ी देर का है। जीवन मूल्यवान है क्योंकि हमें परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है। यदि शारीरिक मृत्यु के बाद कुछ न होता तो हम चाहे जैसे जीये इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परन्तु इस बात का कि मरने के बाद भी जीवन है, अर्थ यह है कि इससे फर्क पड़ता है कि हमारा जीवन कैसा है।

हम में से हर किसी में जीवित प्राण है। यह आत्मा बड़ी कीमती है। हमारी आत्मा इतनी मूल्यवान है कि सारे संसार की सारी दौलत से भी इसे खरीदा नहीं जा सकता। "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" (मत्ती 16:26)।

घास की तरह पृथ्वी पर हमारा जीवन थोड़ी देर तक का है। "और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है" (याकूब 4:14)। पृथ्वी पर का जीवन थोड़े समय का है, इसलिए हम सब के लिए मृत्यु की वास्तविकता पर विचार करना और परमेश्वर से मिलने की तैयारी अभी से आरम्भ करना आवश्यक है। "और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27)।

यीशु हम सब को बुलाता है कि उद्धार के लिए हम उसके पास आएं। "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है" (मत्ती 11:28-30)। एक पापी मनुष्य परमेश्वर के वचन को सुनकर, प्रभु यीशु में

विश्वास लाकर, सब पापों से मन फिराकर, मसीह में विश्वास का अंगीकार करके, और बपतिस्मा लेकर परमेश्वर से मिलने की तैयारी कर सकता है (मरकुस 16:15–16; मत्ती 10:32; प्रेरितों के काम 2:38)। परमेश्वर हम सबसे अनन्तकाल में जाने के लिए तैयार होने को कहता है। यदि हम अभी तैयार नहीं होंगे तो हमें विनाश में डाल दिया जाएगा।

"क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26–27)।

"स्वर्ग में एक पमरेश्वर है"

कैसे सुनें (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)

अर्ल डी. एडवर्डस्

थिस्सलुनीकियों के "अच्छे हृदय" को टुकड़ों में दर्शाया गया था कि उन्होंने परमेश्वर के वचन को कैसे ग्रहण किया था।

उन्होंने वचन को "परमेश्वर के वचन" के रूप में समझा (आयत 13अ)। जो संदेश उन्होंने सुना था वह पौलुस और उसके सहयोगियों जैसे मनुष्यों के द्वारा आया था (देखें रोमियों 10:14)। फिर भी, यह संदेश मनुष्य से उत्पन्न नहीं हुआ था। गलातियों 1:11, में पौलुस ने लिखा है, "जो सुसमाचार मैं ने सुनाया है, वह मनुष्य का नहीं।" बाद में उसी अध्याय में उसने यह भी लिखा है कि उसको हृदय परिवर्तन के बाद वह तुरंत यरूशलेम नहीं गया (आयत 17) और उसका संदेश यीशु मसीह के प्रकाशन से ही उसे मिला (आयत 12)। पौलुस का थिस्सलुनीकियों को दिया गया वही संदेश है जो उसने आसिया की कलीसियाओं को लिखा था। यह संदेश परमेश्वर की प्रेरणा से रचा था।

उन्होंने वचन को "परमेश्वर का वचन" समझकर ग्रहण किया था (आयत 13ब)। पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा कि "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16अ)। यहाँ प्रेरणा शब्द "श्वास लेने" की ओर संकेत करता है जो इस बात का सूचक है कि ये शब्द परमेश्वर के मुख के श्वास से निकला है। थिस्सलुनीकियों ने "संदेश प्राप्त किया" का तात्पर्य यह हुआ कि उन्होंने उसे अपने कानों से सुना और उन्होंने उसे "स्वीकार भी किया" का तात्पर्य यह हुआ कि वह संदेश उनके स्तर के होने के कारण उन्होंने उसका आलिंगन किया।

उस संदेश ने तब उनमें "कार्य किया" और उनके जीवन को बदल डाला। यह विचार उससे मिलता जुलता है जिसे पौलुस ने अन्य पत्रों में लिखा। इफिसियों 3:20 में, उसने "वह सामर्थ्य जो हममें कार्य करता है" के बारे में लिखा है। फिलिप्पियों 2:12, 13 में, पौलुस ने लिखा, "डरते और कांपते हुए अपने–अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।" परमेश्वर ने उनके जीवन में अपने कार्य के द्वारा परिवर्तनकारी प्रभाव डाला है जिसने उन्हें परमेश्वर की महिमा के स्वरूप में गढ़

दिया (2 कुरिन्थियों 3:18)।

जब हम सुसमाचार सुनते हैं तो क्या हम इसे परमेश्वर की ओर से आए संदेश के रूप में ग्रहण करते हैं? कभी-कभी मसीही लोग ऐसा बहाना बनाते हैं मानो यह संदेश कहीं ओर से आया" है यद्यपि वे यह अपने मुंह से नहीं कहते। उदाहरण के लिए, जब एक प्रचारक यह प्रचार करता है कि "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें" (इब्रानियों 10:25), और तब श्रोता इसका प्रत्युत्तर ऐसा देते हैं, "यह आपका विचार है, प्रचारक।" परमेश्वर कहता है, "हर एक अच्छे काम के लिये तैयार रहें" (तीतुस 3:1), परंतु कलीसिया यह कहती है, "प्राचीन यही चाहते हैं।" हमें यह स्मरण रखना होगा कि बाइबल की शिक्षा मनुष्य की बातें नहीं है।

हमें बाइबल की शिक्षा को परमेश्वर का वचन मानकर ग्रहण करना चाहिए। यह स्मरण रहे कि पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती है (यूहन्ना 10:35) और परमेश्वर एक "भस्म करने वाली आग है" (इब्रानियों 12:29)। अच्छे मन वाले लोग बाइबल को परमेश्वर का वचन मानकर ग्रहण करते हैं।

जब वचन प्रचार किया जाता है (2:13)

मसीही होने के नाते, परमेश्वर का वचन स्वीकार करना हमारा सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। उसके वचन के बिना उद्धार के मार्ग तक पहुँचना असंभव है, और उसके वचन के बिना मसीही जीवन की सच्ची उन्नति भी नहीं हो सकती है।

जिस प्रकार थिस्सलुनीकियों ने जो वचन उनको प्रचार किया गया, ग्रहण किया उसके लिए पौलुस लगातार धन्यवाद देता रहा। उनके वचन ग्रहण करने के द्वारा ही उनके लिए हृदय परिवर्तन का द्वार खुल गया।

उन्होंने वचन ग्रहण करना चुना। उन्होंने इसे सुना, इसकी महत्त्वता जानी, और अपने लिए इसे अनंतकाल का संदेश माना।

उन्होंने विश्वास किया कि यह परमेश्वर का वचन है। थिस्सलुनीकियों ने इस संदेश को उन लोगों के परे जाना जिन्होंने इसे उन तक पहुँचाया था। उन्होंने यह देखा कि वे परमेश्वर के आत्मा से प्रेरित हैं। उन्होंने यह जाना कि परमेश्वर पौलुस और उसके सहकर्मियों के शब्दों द्वारा उनसे बातचीत कर रहा है। कोई भी सचमुच सुसमाचार को तब तक ग्रहण नहीं कर सकता है जब तक कि वह इसे परमेश्वर की ओर से आया हुआ ग्रहण न कर ले।

उन्होंने इसे जीवित और प्रभावकारी वचन मानकर ग्रहण किया। उन्होंने इसे केवल जीवन रहित, धूल भरा या ठंडा ही नहीं समझा बल्कि उन्होंने इसे तथ्य, सत्य, तथा सटीक पाया। ये शब्द परमेश्वर की आत्मा के सामर्थ्य से जीवित थे। जब उन्होंने इसके लिए अपने हृदय खोला तो उन्होंने इन वचनों को अपने जीवन में कार्य करते हुए पाया।

यहाँ लघु वाक्य में यह प्रदर्शित किया गया है कि कैसे एक व्यक्ति मसीही बनता है। वह परमेश्वर के जीवित और प्रभावकारी वचन को ग्रहण करता है और परमेश्वर की आत्मा से सशक्त वचन उस व्यक्ति को जीवित यीशु मसीह की ओर परिवर्तित करता है।

हर एक अच्छे मन को यह पूछना चाहिए, "मैंने वचन कैसे ग्रहण किया है?"

सुसमाचार को संचारित करना (2:1–13)

इस अध्याय में पौलुस ने थिस्सलुनीके में विरोधी यहूदियों के अरोपों का जवाब दिया है। उसने पाठकों को यह स्मरण दिलाया है कि किस प्रकार वह स्वयं, तीमुथियुस और सीलास उनके मध्य रहे, कार्य एवं प्रचार किया। हमें यहाँ एक दृश्य दिखाई देता है कि जब हम सुसमाचार प्रचार करते हैं तो हमारा भाव, व्यवहार, और तरीका कैसा होना चाहिए। यह अनुच्छेद सुसमाचार प्रचार के लिए एक व्यक्तिगत मार्गदर्शिका के रूप में कार्य कर सकता है।

यह नए नियम का एक सर्वश्रेष्ठ पाठ है जो पौलुस और उसके सहयोगियों के मौखिक और लिखित संदेश की ईश्वरीय प्रेरणा की पुष्टि करता है।

यदि हम पूछें, "नए नियम का सुसमाचार संदेश प्रचार और संचार का सबसे प्रचलित और सबसे अधिक प्रयोग किया जाने वाला पाठ कौन सा है?" तो इसका उत्तर संभवत: 2 तीमुथियुस 4:1–4 होगा। लेकिन दूसरा उत्तर 1 थिस्सलुनीकियों 2:1–13 हो सकता है। थिस्सलुनीकियों का यह अनुच्छेद संभवत: 2 तीमुथियुस 2:1–4 के समान अधिक प्रयोग नहीं किया जाता होगा; लेकिन अधिकांश शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक, कलीसिया के प्राचीन, माता–पिता और मसीही लोग इस अनुच्छेद को बहुत महत्व देंगे क्योंकि यह विशेशकर सुसमाचार संदेश के प्रेरणा और संचार के तरीके के बारे में बातें करता है।

संदेश (2:13)। कुछ लेखकों ने इस बात की पुष्टि करने का प्रयास किया है कि पौलुस ने कभी भी अपने संदेश का ईश्वरीय प्रेरणा और अधिकारपूर्ण होने का दावा नहीं किया है। यह दावा नए नियम के प्रमाण की रोशनी में अनाधिकृत ठहरता है। थिस्सलुनीकियों की इस पत्री में ईश्वरीय प्रेरणा और सुसमाचार का अधिकार, जिसे पौलुस ने प्रचार किया था कई दावों का संकेत पाया जाता है। उसने कहा, "क्योंकि तुम जानते हो, कि *हम* ने प्रभु यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:2, 3; बल दिया गया)। आयत 8 कहती है, "इस कारण जो इसे तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है।" इन दोनों आयतों को एक साथ देखें। दो और दो चार होते है। क्या 2 और 8 बराबर होते है? आयत 2 में पौलुस कहता है, "तुम जानते हो, कि *हम ने प्रभु* यीशु की ओर से तुम्हें कौन कौन सी आज्ञा पहुंचाई।" आयत 8 कहती है, "... जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नहीं, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है।" अब इन दोनों आयतों में क्या स्पष्ट है? वह कह रहा था, "यह परमेश्वर का वचन है।" (1 थिस्सलुनीकियों 2:1–6, 8)। उन्हें इस संदेश को प्रचार करने के लिए किसने प्रेरणा दी? कोई भी व्यक्ति उस बात के लिए दु:ख नहीं उठाना चाहेगा जिसको वह नहीं मानता है। इसके साथ ही, दु:ख उठाना, गंदगी से शुद्ध होने का माध्यम है। और इच्छाओं को स्पष्ट करता है। फिलिप्पी में जो कुछ हुआ वह उनकी प्रेरणा के बारे में बहुत कुछ बताता है। वे पीटे गए, लेकिन उसके बाद भी वे सुसमाचार प्रचार करते रहे।

वे किसी भ्रम, अशुद्ध या छल से प्रेरित नहीं हुए थे। पौलुस ने कहा, "मैं मनुष्यों से आदर नहीं चाहता हूँ। मैं परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता हूँ। इन सारी बातों ने हमें प्रेरित नहीं किया। और न ही ये हमारे संदेश की विशेषता है।"

वे स्वार्थी होकर सेवा नहीं करना चाहते थे। पाँचवीं आयत में उसने अपने मन की बात कह डाली और यह स्पष्ट किया कि नाकारात्मक बातों ने उसे ऐसा करने के लिए विवश नहीं किया है।

पौलुस इस कार्य में आर्थिक फायदे के लिए नहीं लगा था। जहाँ तक हम जानते हैं कि नए नियम में थिस्सलुनीके की कलीसिया उन दो कलीसियाओं में से एक थी जहाँ से पौलुस को किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग नहीं मिला था। उसने 1 कुरिन्थियों 9 में यह तर्क रखा कि उसको आर्थिक सहयोग लेने का अधिकार है परन्तु इसके साथ उसने यह भी तर्क रखा कि उसे इस अधिकार का प्रयोग करने और न प्रयोग करने का पूरा अधिकार भी है। थिस्सलुनीके और कुरिन्थुस में पौलुस ने अपने हाथों से मेहनत की और कुरिन्थियों को यह कहते हुए लिखा, "दूसरी कलीसियाओं ने मेरी सहायता की है।" ध्यान दीजिए कि 2 कुरिन्थियों 11:8 उसने क्या लिखा, "मैं ने अन्य कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैं ने उन से मज़दूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करुं।" थिस्सलुनीके और कुरिन्थुस, दोनों स्थानों पर उसने तम्बू बनाने का काम किया। वह लोभ, तथा भौतिकवाद की भावनाओं से प्रेरित नहीं था।

वह मनुष्यों की प्रशंसा से भी प्रेरित नहीं था। यह मनुष्यों की प्रशंसा नहीं थी जिसने थिस्सलुनीके में कार्य करने में उसके मानवीय अंहकार को प्रज्वलित किया था। ध्यान दीजिए उसने 2:6 में क्या कहा: "तौभी हम मनुष्यों से आदर नहीं चाहते थे, और न तुम से, न और किसी से।"

मानवीय आत्मा का आदर चाहने का दृष्टिकोण विश्वास की राह में रोड़ा अटका सकता है। यूहन्ना 5:44 में, यीशु ने कहा, "तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?"

पौलुस ने सेवा क्यों की? उसने प्रेम के कारण सेवा की। यदि आदर पाने की उसकी चाह नहीं थी, यदि लोभ का वस्त्र उसने नहीं पहना था, और यदि उसने चापलूसी भरी बातों का प्रयोग नहीं किया था, तो पौलुस को सेवा करने के लिए किसने प्रेरित किया था? उसने हमें आठवीं आयत में ऐसा बताया, "और वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार, पर अपना-अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे, इसलिये कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे।"

संदेश के संचार में हम केवल तथ्यों का पुलिंदा ही नहीं देते हैं। हम इसे पाप क्षमा के संदर्भ में देखते हैं जिसमें - विश्वास को पश्चाताप, अंगीकार, और उसके मृत्यु में बपतिस्मा के रूप में प्रकट करते हैं। हम न केवल संदेश देते हुए आते हैं बल्कि हम अपने आपको भी अर्पण करते हैं। सबसे प्रभावकारी शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक, और कोई भी कार्यकर्त्ता वही हो सकता है जो पौलुस के समान कहे, "तुम हमारे प्यारे हो गए हो।" पौलुस की दृढ़ इच्छा प्रकट करने का यह दूसरा तरीका है कि उसमें केवल प्रेम की ही इच्छा थी। वह प्रभु से प्रेम करता था और सुसमाचार से भी प्रेम करता था। इस अनुच्छेद से यह सच्चाई स्पष्ट है कि वह लोगों की आत्मा से प्रेम करता था।

व्यवहार (2:7, 11)। उसके व्यवहार के बारे में क्या? नीयत और व्यवहार अति

घनिष्ठ है। बल्कि किसी की नीयत उसके व्यवहार और रहन सहन के तरीके का निर्धारण करती है। इस भाग में पौलुस ने दो मार्मिक चित्रों का प्रयोग किया है। उनमें से एक सातवीं आयत में अवतरित है। वह कहता है, "परन्तु जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है, वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।" इससे भी अधिक हृदय स्पर्शी दृश्य ग्यारहवीं आयत में पाया जाता है, जिसमें व्यक्तिगत फिक्र का दृश्य दिखाई देता है: उसने कहा, "तुम जानते हो कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है, वैसे ही हम भी तुम में से हर को उपदेश करते, और शान्ति देते, और समझाते थे।"

प्रत्येक बच्चे को अपने माता पिता के कुछ समय की आवश्यकता होती है। आप औसत रूप से अपने बच्चों की देखभाल नहीं करते हैं। इस भाग में प्रेम की महान अभिप्रेरणा पाई जाती है और यह प्रेम व्यवहार और तरीके तक फैल गया है। यह थिस्सलुनीके के प्रत्येक विश्वासी के लिए व्यक्तिगत चिंता का विषय बन गया था। यह कोमल प्रेम था जो सब लोगों तक पहुँच रहा था। यह आधिकारिक संदेश की प्रेममय प्रस्तुति थी। पौलुस स्वयं अपने आपको देने के लिए तैयार था।

अक्सर प्रेम और *तर्क* मनों को खोलता है। क्या यह सच नहीं है कि लोगों को इस बात की परवाह नहीं होती कि आप कितना ज्ञान रखते हैं जब तक उन्हें यह पता नहीं चलता कि आप कितनी परवाह करते हैं।

जॉर्ज सान्तायान ने 1905 में पाँच खण्डों वाली पुस्तक *द लाइफ आफ रीजन* लिखना समाप्त किया। उसके बाद मृत्यु से पहले उन्होंने उन किताबों का पुन: सम्पादन किया और अधिकांश हिस्सा दोबारा लिखा। इन वर्षों के बीतने के बाद किसी ने उनसे पूछा, "क्या आपने अपना दुष्टिकोण बदला?" क्या आपने अपनी विचारधारा बदली? क्या आपके अब दूसरे आदर्श हो गए हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं! नहीं! मैंने वही बातें लिखी हैं लेकिन उन्हें मैं अब दूसरे सुर में कहना चाहता था।" बोलने या लिखने का वह सुर बहुत महत्वपूर्ण है। महान् शिक्षा, प्रचार और व्यक्तिगत कार्य में अर्थ और आचरण में गहरा संबंध है। जब हम प्रेम का संदेश प्रचार करते हैं तो हमारा आचरण भी प्रेममय होना चाहिए।

उपसंहार। जब सुसमाचार का महान संदेश प्रेम पूर्वक प्रस्तुत किया जाता है तो लोग उसका तिरस्कार नहीं करते हैं। मैं समझता हूँ कि यदि इस उद्धार देने वाले संदेश को, जिनके साथ हम बातचीत करते हैं, उन तक ले जाएं, और उनके प्रति सच्ची चिंता व्यक्त करें, तो हम में से बहुत से लोग उन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

हम संदेश देखते हैं। यह परमेश्वर का वचन है: "तो तुम ने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया" (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)। यहाँ इस संदेश की मंशा हमें देखने को मिलती है - एक महान प्रेम की मंशा, स्वार्थपूर्ण मंशा नहीं, और न ही वह मंशा जिसमें मनुष्य का आदर प्राप्त करना हो। हमें यहाँ प्रेम की मंशा दिखाई देती है जहाँ पौलुस उन लोगों तक जाता है जो खोए हुए हैं - "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है" या शायद इससे भी अधिक "जैसा पिता अपने बालकों के साथ व्यवहार करता है।"

स्वर्ग की उनकी आशा (कुलुस्सियों 1:5)

ऑवन डी. आल्ब्रट

उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुई है, जिस का वर्णन तुम उस सुसमाचार के सत्य वचन में सुन चुके हो।

"उस आशा की हुई वस्तु के कारण जो तुम्हारे लिए स्वर्ग में रखी हुई है" (1:5)

टीकाकारों को पौलुस के कारण के उपयोग की समझ नहीं आती। लगता है कि इसका इस्तेमाल आशा को विश्वास और प्रेम का आधार बनाने के लिए किया गया है: "पौलुस की भाषा हमें अपनी आशा को विश्वास और प्रेम के परिणाम के रूप में मानने से रोकती है, बल्कि इसके विपरीत है।"

कुछ लोगों ने पौलुस के धन्यवाद को ही केवल आशा का आधार बनाने के लिए इस वचन के शब्दों को बदलकर उसे जिसे वे समस्या मानते हैं निकालने की इच्छा की है। "विश्वास" परमेश्वर के वचन के द्वारा हो सकता है (रोमियों 10:17; देखें यूहन्ना 17:20) और "प्रेम" परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करना हो सकता है (1 यूहन्ना 4:9)। ये गुण आशा पर आधारित भी हो सकते हैं। जलती हुई इमारत में फंसे लोग इस भरोसे के साथ कि जो लोग उन से प्रेम करते हैं वे उन्हें बचा लेंगे, प्रेम पर अपनी आशा बना सकते हैं। वे खतरे से उन्हें निकालने की अग्निशमन के कार्यकर्त्ताओं की योग्यता में भरोसा रखकर भी विश्वास पर अपनी आशा बना सकते हैं।

आशा (elpis), "उम्मीद" बड़े मसीही गुणों में से एक है। यह किसी की चाह रखना नहीं बल्कि विश्वास के ऊपर बनी पक्की उम्मीद और पूरा भरोसा है (इब्रानियों 11:1)। इस कारण आशा विश्वास का परिणाम है (गलातियों 5:5) जो परमेश्वर में और यीशु मसीह में रखा गया है (प्रेरितों 24:15; 1 थिस्सलुनीकियों 1:3; 1 तीमुथियुस 1:1; 1 पतरस 1:21)। विश्वास उस पर भी रखा जाता है जो पवित्र शास्त्र में लिखा है, और सुसमाचार में प्रकट की गई सच्चाइयों पर भी रखा जाता है (रोमियों 15:4; कुलुस्सियों 1:23)। मसीह का पुनरूत्थान हमें एक पुनरूत्थान की आशा देता है (प्रेरितों 23:6; 1 पतरस 1:3, 4)। सब मसीही लोगों में वही आशा है- उद्धार की एक और इकलौती आशा, जो अनन्त जीवन को सम्भव बनाएगी (कुलुस्सियों 1:5; 1 थिस्सलुनीकियों 5:8; तीतुस 1:2; 3:7)। परमेश्वर का वह अनुग्रह जो कृपा देता है, जिसे कमाया नहीं जा सकता, आशा दे सकती है (2 थिस्सलुनीकियों 2:16; 1 पतरस 1:13), और वह आशा जो उद्धार पाने और पवित्र जीने के लिए लोगों को प्रेरित कर सकती है (रोमियों 8:24; 1 यूहन्ना 3:3)। आशा आश्वासन देती है (इब्रानियों 6:11), जिसमें मसीही लोग आनन्द कर सकते हैं (रोमियों 5:2; 12:12)। ऐसी आशा के साथ कोई मसीह में अपने विश्वास से लज्जित नहीं होगा (रोमियों 1:16)। यह प्राण के लिए लंगर है (इब्रानियों 6:18, 19)।

यदि किसी बात पर आशा नहीं रखी जाती, तो अधिकतर इसे पाने के लिए प्रयास नहीं करते। परन्तु अपने आप में ही आशा मूल्यरहित है; आशा के साथ विश्वास जो "प्रेम के द्वारा प्रभाव" होना आवश्यक है (गलातियों 5:6)। विश्वास और प्रेम के ऊपर

ऊपर बनी आशा परमेश्वर के अनुग्रह पर आधारित है (1 पतरस 1:13)। विश्वास अनुग्रह तक ले जाता है जिस पर आशा बनी है।

मसीही लोगों के रूप में हमें वह मिलने की आशा है, जो हमारे पास है नहीं और अभी मिली नहीं है। यदि हमें यह पहले ही मिल गया होता तो हम इसकी आशा न रखते (रोमियों 8:24)। आशा परमेश्वर का गुण नहीं है, क्योंकि वह भविष्य को उतने ही पक्के तौर पर जानती है जितना मनुष्यजाति अतीत को जानती है। यहां बहुतायत के जीवन के आनन्द के अलावा (यूहन्ना 10:10), स्वर्ग की आशा मसीही लोगों को यीशु के लिए जीने के लिए प्रेरक बल है। वर्तमान जीवन मसीह के सेवकों द्वारा उम्मीद किए जाने वाले तेजस्वी जीवन का केवल एक पूर्व स्वाद है। वर्तमान की आशिषें केवल इससे कहीं अधिक आनन्ददायक भविष्य का आरम्भ हैं जिसकी हमें आशा है।

मसीही लोगों की आशा **स्वर्ग में रखी हुई** है। "रखी हुई" (apokeimai) का अर्थ है "एक तरफ रखना" (लूका 19:20), "सम्भाल रखा" या "सुरक्षित रखा" है। 2 तीमुथियुस 4:8 और इब्रानियों 9:27 में यही यूनानी शब्द मिलता है जहां इसका अनुवाद "रखा हुआ" और "नियुक्त" हुआ है। जो लोग मसीह के हैं स्वर्ग में उनका स्थान सुरक्षित है। ऐसा आश्वासन स्वर्ग की मसीही आशा देती है। पौलुस ने लिखा, "पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है" (फिलिप्पियों 3:20)। मसीही लोग स्वर्ग के नागरिक हैं। इसका अर्थ यह है कि हम एक विदेशी देश में बाहरी हैं, जिन्हें अपने घर से अलग किया गया है और अपने आस पास के लोगों जैसे नहीं हैं (1 पतरस 2:11)।

यूनानी शब्द वनतंदवप (मूल में, "स्वर्गों," बहुवचन) नये नियम में बार-बार मिलता है और इसका अर्थ "स्वर्ग" है। कुलुस्सियों की स्वर्ग की आशा को उन्हें पौलुस द्वारा नहीं बताया गया था। उन्होंने पहले ही सुसमाचार को सुना हुआ था और उन में स्वर्ग की आशा बढ़ गई थी जो अधिक सम्भावना है कि इपफ्रास की शिक्षा से मिली थी।

बाइबल में "स्वर्ग" का इस्तेमाल तीन अर्थों में किया गया है। पहला स्वर्ग पृथ्वी के आस पास का वातावरण है, जहां बादल तैरते, धुआं उठता, और हवाई जहाज़ और पक्षी उड़ते हैं (मत्ती 6:26; 8:20)। दूसरा स्वर्ग तारों और आकाश-गंगाओं वाला क्षेत्र है (मत्ती 24:29)। तीसरा स्वर्ग परमेश्वर का और स्वर्गदूतों की उसकी सेनाओं का निवास स्थान है (मत्ती 6:9; 18:10)।

मसीही व्यक्ति की आशा यीशु के साथ होने की है (यूहन्ना 14:2)। यह स्पष्टता तीसरे स्वर्ग में होगी, जिसका उल्लेख 2 कुरिन्थियों 12:2 में है। स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है, जहां मांस और लहू नहीं जा सकते, क्योंकि वहां पर जाने वाले लोग बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:50-53)। स्वर्ग में रहने वालों की आत्मिक देह होगी (1 कुरिन्थियों 15:44), वे मसीह के जैसे (फिलिप्पियों 3:21) और परमेश्वर जैसे बन जाएंगे (1 यूहन्ना 3:2)। परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24), और आत्मिक जीवों के मांस और हड्डियां नहीं होती (लूका 24:39)।

भौतिक संसार के विपरीत जिसे देखा जा सकता है, यह अनन्तकालिक नहीं है, आत्मिक अर्थात् स्वर्गीय क्षेत्र को देखा नहीं जा सकता है और यह अनन्तकालिक हे (2 कुरिन्थियों 4:18)। अपने आत्मिक स्वभाव के कारण स्वर्गीय क्षेत्र को भौतिक वस्तुओं के द्वारा ब्यान नहीं किया जा सकता परन्तु जो कुछ भौतिक है उससे केवल

इसकी तुलना की जा सकती है। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहने वालों को केवल आनन्द ही मिलेगा, क्योंकि स्वर्ग में शोक, रोना या मृत्यु नहीं होगी (प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)। यह ऐसा स्थान है जो "अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए" (1 पतरस 1:4)। कुलुस्से के लोगों को इस क्षेत्र में जाने की आशा थी और सब मसीही लोग वहां जाने की आशा कर सकते हैं।

पौलुस कुलुस्से के लोगों को मसीही जीवन का सही दृष्टिकोण देने की चाह कर रहा हो सकता है। उनकी आशा इस जीवन की आशिषों तक सीमित नहीं थी। इसके विपरीत इन भाइयों के पास दोनों संसारों की बेहतरीन चीजें थीं: वर्तमान में मसीह के साथ जीवन का आनन्द और जीवन उपरांत स्वर्ग में उसके साथ होने की आशा।

परमेश्वरत्व का महत्व

जैरी बेट्स

परमेश्वरत्व की शिक्षा मसीहियत की सबसे विवादास्पद और वाद-विवाद वाली शिक्षाओं में से एक है, फिर भी यह सबसे बुनियादी शिक्षा है। इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए कि परमेश्वर को समझना हमें कठिन लगता है, क्योंकि हम अपने सीमित मनों से असीमित परमेश्वरत्व को समझने की कोशिश कर रहे होते हैं। फिर भी यह आवश्यक है कि मसीही लोगों को इस महत्वपूर्ण शिक्षा की समझ हो। परमेश्वरत्व की शिक्षा का अर्थ यह है कि पिता परमेश्वर, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा तीनों, ईश्वरीय हैं पर वे तीन परमेश्वर नहीं हैं, बल्कि एक परमेश्वर है। परमेश्वरत्व के लिए अंग्रेजी शब्द Godhead एक लातीनी शब्द है, जिसका अर्थ है "एक में तीन।" इस प्रकार परमेश्वरत्व परमेश्वर के एकता में तीन होने को दर्शाता हैं। इस शिक्षा को समझना कठिन है इसलिए ज्यादातर लोग इसे मानने से इनकार कर देते हैं या किसी प्रकार से इसे बदल देते हैं, जो यीशु या पवित्र आत्मा या दोनों के पूर्णतया ईश्वर होने का इनकार होने का कारण बनता है।

हम पहले इस प्रश्न पर ध्यान देंगे कि "क्या परमेश्वरत्व की शिक्षा से कोई फर्क पड़ता है?" फिर हम यीशु और पवित्र आत्मा के ईश्वरीय होने के बाइबल के परिणाम को देखेंगे। अंत में हम इस प्रश्न का अध्ययन करेंगे कि "क्या परमेश्वरत्व की शिक्षा का कोई मतलब है?"

कुछ लोग क्यों इस शिक्षा को छोड़ देना चाहते हैं?

कुछ लोग तो कहेंगे कि इस शिक्षा से असल में कोई खास फ़र्क नहीं पड़ता। उनकी नज़र में यदि परमेश्वरत्व सच न भी हो तौभी नैतिक तर्क नहीं बदलेगा। ज़्यादातर मसीही साहित्य में बहुत कम बदलाव होगा। व्यावहारिक तौर पर बहुत से मसीही लोगों को किसी प्रकार से परमेश्वरत्व की शिक्षा की असल में कोई समझ नहीं है, तो फिर इससे क्या फर्क पड़ता है? जिस पैमाने से बहुत से लोग सच्चाई का फैसला करते हैं वह यह है कि "यह मेरे लिए क्या करती है?" अन्य शब्दों में यदि यह मेरे लक्ष्य या उद्देश्यों तक पहुंचने में सहायक नहीं है तो इसे छोड़ देना चाहिए या नज़रअंदाज कर देना चाहिए। इस प्रकार से बहुत से मसीही लोगों के अनुसार यह शिक्षा बांटती भी है, इसलिए इसे छोड़ दिया जाना चाहिए।

इन कारणों से बहुत से लोग यह कहेंगे कि व्यावहारिक तौर पर व्यक्ति पर परमेश्वरत्व का बहुत कम फर्क पड़ता है इसलिए, इसका इतना महत्व नहीं है।

कुछ हद तक परमेश्वरत्व में विश्वास को निकालना सामान्य रूप में मसीहियत को फिर से परिभाषित करने को दिखाता है। आज के समय में धर्म में आम तौर पर भावनाओं पर या कुछ सामाजिक परिस्थितियों में जिन में हम रह रहे होते हैं, धर्म के प्रभाव पर जोर दिया जाता है। दोनों ही बातों में उन परिस्थितियों के लिए परमेश्वरत्व अप्रासंगिक है, इस कारण एक बार फिर बहुत से लोग इस पर जोर देंगे कि इस शिक्षा को छोड़ दिया जाए।

अन्य धर्मों के साथ झगड़े और ठट्ठे का मुख्य कारण परमेश्वरत्व की शिक्षा भी है। अन्य धार्मिक शिक्षाएं आम तौर पर मसीही व्यक्ति पर बहुईश्वरवादी होने का आरोप लगाएंगी, क्योंकि हम परमेश्वरत्व में विश्वास रखते हैं जिनका उनके अर्थ में तीन ईश्वरों को मानना है। बेहतरीन अर्थ में यह शिक्षा एक पहेली जैसी है जबकि बदतरीन अर्थ में यह स्पष्ट विरोधाभास है। परमेश्वरत्व झगड़े का एक मुख्य कारण है इसलिए बहुत से लोग इस फूट डालने वाली ऐसी शिक्षा को छोड़ देने को कहेंगे।

परमेश्वरत्व का महत्व

परन्तु यह शिक्षा छोटी या महत्त्वहीन नहीं है क्योंकि यह परमेश्वर के स्वभाव को बताती है। परमेश्वरत्व का एक पहलू परमेश्वर का देहधारी होना यानी परमेश्वर का मनुष्य बनना है। मनुष्य आम तौर पर चकित होता है कि जब परेशानियां और मुश्किलें आती हैं तब परमेश्वर कहां होता है। देहधारी होना इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर संसार की तकलीफों के प्रति उदासीन नहीं है, बल्कि वह उसे बचाने के लिए संसार का भाग बन गया। यह शिक्षा बेकसूर तीसरे पक्ष को दण्ड देने के काल्पनिक अनैतिक प्रबन्ध को भी निकाल देती है। यदि यीशु परमेश्वरत्व का भाग है तो वह अनिच्छा से बलिदान नहीं हुआ था। इसके अलावा परमेश्वरत्व मसीहियत को अन्य धर्मों से अलग करती है। हमारे बहुवादी धार्मिक समाज में बुनियादी तौर पर सभी धर्मों को बराबर माना जाता है, और उनके बीच के अंतरों को मान लेना और नज़रअंदाज किया जाना चाहिए। परन्तु परमेश्वरत्व ऐसे विश्वास को असम्भव बना देता है। परमेश्वरत्व को अन्य धर्मों में नहीं मिलाया जा सकता। यह विलक्षण है।

आम तौर पर मसीही लोगों में इस प्रश्न पर चर्चा होती है कि हमें किससे प्रार्थना करनी चाहिए। बाइबल हमें केवल परमेश्वर पिता को छोड़ किसी और से प्रार्थना करने की आज्ञा नहीं देती है। इसलिए हर प्रार्थना केवल परमेश्वर पिता से ही की जानी चाहिए। यह तरीका परमेश्वरत्व के हर व्यक्ति के काम को पूर्ण रूप में अलग मानता है। परन्तु परमेश्वरत्व के विचार से यह पता चलता है कि कुछ काम चाहे परमेश्वरत्व के एक व्यक्ति का मुख्य काम हो सकता हैं, पर हर पहलू में वे तीनों शामिल होते हैं। मसीह के नाम में, परमेश्वर से की गई हमारी प्रार्थनाओं में पवित्र आत्मा सहायता करता है (रोमियों 8:26-27; यूहन्ना 15:16; 16:23)। इसलिए हमारे परमेश्वर पिता से हमारे प्रार्थना करने के समय, प्रार्थनाओं का उत्तर देने में सभी शामिल होते हैं और यह बात हमें परमेश्वरत्व के अलग-अलग सदस्यों के काम में इतने स्पष्ट विभाजन पर सवाल करने को बाध्य करती है। हमारी प्रार्थथाएं और आराधना केवल परमेश्वर पिता के बजाय त्रिएक परमेश्वर के सामने होती हैं।

क्या हमारा एक-दूसरे को जोड़ने का ढंग परमेश्वरत्व पर निर्भर है?

परमेश्वरत्व इस बात के लिए नमूना बन जाता है कि हम उन्हें एक-दूसरे से कैसे जोड़ें। परमेश्वरत्व के तीनों सदस्य सदा से समान हैं। एक और पाठ में हम कुछ वचनों पर चर्चा करेंगे; जो यीशु के अधीन होने का संदेश देते हैं, परन्तु इतना कहना काफी है कि यीशु के किसी भी प्रकार के अधीन होने को पृथ्वी पर उसके देहधारण करने के भाग के रूप में माना जाए न कि अनन्त अर्थ में। यीशु ने कहा कि जैसे वह और पिता एक हैं, वैसे ही हम भी एक हों (यूहन्ना 17:11, 21)। इस प्रकार परमेश्वरत्व की एकता और एक होने की समझ यह समझने के लिए आवश्यक है कि उसके चेलों के रूप में हम एक कैसे हो सकते हैं।

सबसे पहले तो हर मसीही को बराबर महत्व का माना जाना चाहिए। बेशक बहुत से लोगों के अलग-अलग गुण, योग्यताएं और काम होते हैं परन्तु फिर भी परमेश्वर की नज़र में हमारा मूल्य और महत्व एक सा है। "और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने यसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:27)। इसलिए किसी भी परिस्थिति में जहां एक सदस्य किसी दूसरे सदस्य पर हावी होता है या किसी सदस्य को किसी प्रकार से कम महत्व का माना जाता है तो यह गलत है। जिस कलीसिया में कोई एक व्यक्ति या समूह दूसरों की आवश्यकताओं, परिस्थितियों या इच्छाओं की अनदेखी करता है, वहां बहुत सी समस्याएं खड़ी हो जाती हैं और सत्ता संघर्ष होने लगता है। आपको परमेश्वर के बीच किसी प्रकार का सत्ता संघर्ष नहीं मिलेगा, इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया में भी ऐसी परिस्थिति नहीं आनी चाहिए।

दूसरा, किसी भी व्यक्ति को किसी दूसरे से बढ़कर ऊंचा न किया जाए। स्पष्ट है कि मण्डली के प्रचारक या अगुओं जैसे कुछ सदस्यों की दूसरों से प्रमुख भूमिका होती है। कइयों में अधिक गुण या योग्यताएं होती हैं और कलीसिया में उसके सार्वजनिक योगदान को बड़ा माना जा सकता है। उनकी अधिक आर्थिक प्राप्तियों के कारण कुछ लोग दूसरों से बढ़कर उनको अधिक महत्त्व दे सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में कुछ खास लोगों को दूसरों से बढ़कर महत्त्व देने की मानवीय प्रवृत्ति स्वाभाविक है। परन्तु परमेश्वर की नज़र में यह सही नहीं है। दो उदाहरणों पर विचार किया जा सकता है, जैसे वह निर्धन विधवा जिसने केवल दो दमड़ियां दी थीं, इसके बावजूद यीशु ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि उसने दूसरों से बढ़कर दिया था। याकूब 2 में याकूब पक्षपात दिखाने या उन धनवानों को जो हमारी मण्डलियों में आ सकते हैं, उनको अधिक सम्मान देने को गलत बताता है। परमेश्वर किसी भी बाहरी भेद के बावजूद जो हमारे समाज में पाया जा सकता है हर मसीही को गुण और महत्त्व में बराबर मानता है, और हमें भी वैसा ही मानना चाहिए।

इसके अलावा 1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस कलीसिया को शारीरिक देह के साथ मिलाता है। जिस प्रकार शारीरिक देह में बहुत से अंग होते हैं और हर अंग का अलग-अलग काम होता है, वैसे ही कलीसिया के भी बहुत से सदस्य यानी अंग होते हैं और हर सदस्य का अलग काम होता है। फिर भी कमजोर सदस्यों को गैर-जरूरी नहीं माना जाना चाहिए बल्कि हर सदस्य को मिलकर देह की एकता और उन्नति के लिए काम करना चाहिए। शारीरिक देह में भी यदि केवल एक छोटा सा अंग सही ढंग से काम नहीं करता तो हम यह नहीं मानते

कि देह स्वस्थ और सेहतमंद है। इसी प्रकार से कलीसिया भी जिसमें सभी सदस्य एक नहीं हैं और उन्हें बराबर महत्व नहीं मिलता तो उसे स्वस्थ और सेहतमंद नहीं माना जाना चाहिए।

"यही नियम मण्डलियों के बीच सम्बन्धों में भी देखा जा सकता है। बहुत बार एक मण्डली का काम बिना इस विचार के किया जाता है कि दूसरे कामों या मण्डलियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है। कलीसियाएं आम तौर पर एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करती हैं जिसमें हर मण्डली दूसरे से बड़ी होने की कोशिश करती है। बेशक आगे बढ़ने की कोशिश करने में कोई बुराई नहीं है पर हमें दूसरी मण्डलियों का ध्यान रखना आवश्यक है। मसीहियत कारोबार में प्रतिस्पर्धा नहीं हैं जिसमें छोटे कारोबारी आम तौर पर बड़े कारोबारियों द्वारा दबा दिए जाते हैं, और बेशक कुछ लोग इससे दुखी हो सकते हैं पर हमें ऐसी परिस्थिति को स्वाभाविक और सामान्य मानना चाहिए। कलीसियाओं को केवल अपने उपयोग के लिए रखने के बजाय अपने संसाधनों का इस्तेमाल दूसरों की सहायता करने के लिए करना चाहिए। हम ऐसे दृश्य की कल्पना कभी नहीं कर सकते जिसमें परमेश्वरत्व का एक सदस्य दूसरे सदस्यों पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार किए बिना अपनी मनमानी करे। इसलिए जब हम परमेश्वरत्व पर विचार करेंगे तो मण्डलियां दूसरी मण्डलियों की भलाई का ध्यान रखेंगी।

यही नियम हमारे परिवारों में भी देखा जा सकता है। किसी भी सदस्य को परिवार में गैरजरूरी या कम महत्व का नहीं माना जाना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को सुस्त होकर परिवार की भलाई में कम योगदान नहीं देना चाहिए। परमेश्वरत्व में सब एक हैं और एक ही उद्देश्य के लिए मिलकर काम करते हैं। इसलिए जब अपने जीवनों में हम परमेश्वर पर विचार करते हैं तो घर का हर व्यक्ति अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने के बजाय परिवार की बेहतरी के लिए मिलकर काम करना है।

सारांश

हम उस अंतर पर चर्चा कर रहे हैं जो परमेश्वरत्व से हमारे जीवनों में आता है। परमेश्वर और मसीह अपने सेवकों के जीवनों में रहते हैं। गलातियों 2:20 में पौलुस ने लिखा है कि "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है ...।" यदि हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवनों में जीवित रहे तो हमें परमेश्वर के स्वभाव को समझना आवश्यक है। बहुत बार हम बेशक इस बात पर चर्चा करते हैं कि मसीही लोगों के रूप में हमें एक-दूसरे से कैसे मिलना चाहिएं, पर हम अक्सर भूल जाते हैं या हमें पता नहीं होता कि क्यों। आम तौर पर हम केवल इतना ही कहते हैं कि प्रेम हमें एक विशेष ढंग से काम करने के लिए कहता है। यह सच है, पर यह बात भी परमेश्वर की ओर मोड़ देता है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)। हर परिस्थिति में एक-दूसरे के प्रति हमारे काम करने का ढंग अंत में हमें परमेश्वरत्व में दिखाए गए एक और प्रेम की ओर वापस ले जाता है। यदि हम परमेश्वरत्व को निकाल दें तो हम उस बुनियाद को ही निकाल देते हैं जिस पर हमें अपने जीवनों का सांचा बनाना है। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? उम्मीद है कि आप मानेंगे कि बिल्कुल फर्क पड़ता है!

बेहतरी के लिए बदलाव ज़रूरी है

अरनस्ट गिल

कल्पना करें कि आप एक मुसाफ़िर हैं जो कहीं घूमने के लिए एक गाइड को साथ लेकर गया है। गाइड उस इलाके का अच्छा जानकार था, जिस कारण वह आगे-आगे चल रहा था और आप उसके पीछे-पीछे। चलते हुए आप दोनों आगे बढ़ते जा रहे थे। पहाड़ों की हरी-भरी वादियों में घूमते हुए साफ़ सुथरी हवा का आनन्द ले रहे थे। तभी अचानक से तेज़ बारिश होने लगती है और वह ज़मीन जिसके ऊपर आप खड़े थे, आपके नीचे से बह गई। पता ही नहीं चल रहा था कि रास्ता कहां है। सड़क बह चुकी थी। देखते ही देखते एक बड़ी ढलान भी बह गई और आप बड़ी उत्सुकता से नीचे देखने के लिए आगे बढ़कर झुकने लगे। तभी गाइड ने पीछे मुड़कर आपको ज़ोर से डांट लगाते हुए कहा, “तुम्हारा दिमाग खराब है? मरना है क्या? अगर ज़िंदा रहना चाहते हो तो मेरे पीछे-पीछे आते रहो। वरना यहां तुम्हारी हड्डी पसली ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगी। और हां, मेरे कदमों को ध्यान से देखते रहो। मेरे कदमों की ओर ध्यान रखना और देखना कि वहीं पर पैर रखना जहां पर मैंने पांव रखा हो। तभी तुम मेरे साथ यहां से निकल पाओगे।”

आप हालांकि काफी होशियार हो, पर आपके लिए बचने का, इसके सिवाय और कोई तरीका नहीं था कि गाइड जो जो कहता जाए आप उसे मानते जाओ। गाइड को बेहतर पता था, इसलिए मनमानी करने का मतलब मौत है।

एक और बात, जो आपके लिए जानना आवश्यक थी कि जान बचाने के लिए अपना पूरा फोकस अपने गाइड की ओर लगाकर रखें, और किसी दूसरे की बात पर ध्यान न दें।

जीवन भी ऐसा ही है। संसार में हम सब मुसाफिर हैं। जीवन का रास्ता कहीं ऊंचे पहाड़ और कहीं गहरी खाई सा है। आगे बढ़ने के लिए हमें गाइड की आवश्यकता रहती है। यीशु वो गाईड है। उसे पता है और वह सही सही बता सकता है कि कहां-कहां कदम रखते हुए हम सुरक्षित आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि वह जीवन के इन रास्तों पर से हमसे पहले चल चुका है। हमारे लिए जीवन के इन रास्तों पर अपने आप चलना ख़तरों से खाली नहीं है। बहुत बार जब हम अपने आप चलने की कोशिश करते हैं तो तूफानों में घिर जाने पर हमें कोई रास्ता नज़र नहीं आता है।

यीशु कहता है, “हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे” (मत्ती 11:28-29)।

उसकी यह पुकार हर भूले भटके और थके मांदे के लिए एक राहत है। अपने पीछे चलने के लिए वह बताता है कि हमारे लिए उसके वचन को मानते हुए उसमें बने रहना आवश्यक है।

“यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। तुम सत्य को जानोगे,

और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा" (यूहन्ना 8:31, 32)।

बहुत बार लोग हमें यह बताने की कोशिश करते हैं कि वे हमें बचा सकते हैं। हमें यह पता होना चाहिए कि यीशु न केवल मरे हुओं में से जी उठा, बल्कि चालीस दिन जीवित अपने चेलों को दिखाई देते रहने और उनके साथ खाना खाने के बाद उसे जीवित स्वर्ग में उठा लिया गया। प्रेरितों 1:9-17 में लूका लिखता है कि उन्हें आज्ञा देने के बाद "वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए। और उनसे कहा, 'हे गलीली पुरुष, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

यीशु ने कहा "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पुरा हो जाए। मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूं, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो" (यूहन्ना 15:10-14)।

हमारे लिए इस जीवन को जीने और अनंत जीवन पाने का मार्ग परमेश्वर ने अपने वचन में बता दिया है। इसमें लिखी बातें यीशु का वचन हैं। यूहन्ना 17 में यीशु ने पिता से विनती की "मैं केवल इन्हीं के लिये विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

2 तीमुथियुस 3:16-17 में पौलुस बताता है कि पवित्रशास्त्र हमें उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए दिया गया है ताकि हम सिद्ध बन सकें, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाएं।

अगर हम अपने जीवन को बचाना और बेहतर बनाना चाहते हैं तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपने जीवनों में परमेश्वर के वचन को उतारें।

यह हम एक दिन में तो नहीं बदलेगा, लेकिन रोज़-रोज़ वचन को सुनने और पढ़ने से हम अंश अंश करके उसकी इच्छा को और अच्छी तरह से जानकर और मानकर, अपना और अपने लोगों का बचाव कर सकते हैं।

परमेश्वर की प्रेरणा से प्रेरित पौलुस की यह बात आज भी सच है कि प्रभु यीशु पर विश्वास ला, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा। यदि आप यीशु में उद्धार पाना चाहते हैं तो उसमें विश्वास करके बपतिस्मा लीजिए (मरकुस 16:16)।